केंद्रीय बैंक और वित्तीय स्थिरता*

श्री स्वामीनाथन जे.

प्रतिष्ठित पैनलिस्ट - प्रो. रान्डेल एस. क्रोज़नर, शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और फेडरल रिज़र्व बोर्ड के पूर्व गवर्नर; सुश्री इमैनुएल असौआन, महानिदेशक, वित्तीय स्थिरता और संचालन, बैंक डी फ्रांस; सुश्री सारा ब्रीडेन, वित्तीय स्थिरता के लिए उप गवर्नर, बैंक ऑफ इंग्लैंड; डॉ. साजिद चिनॉय , प्रबंध निदेशक और मुख्य अर्थशास्त्री भारत, जेपी मॉर्गन; रिज़र्व बैंक के सम्मानित प्रतिनिधिगण और सहकर्मी। आप सभी को शुभ अपराह्न।

आज की वित्तीय दुनिया में इस अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषय - "केंद्रीय बैंक और वित्तीय स्थिरता: जोखिमों का मूल्यांकन और उसे सुदृढ़ बनाना" पर इस चर्चा को आरंभ करना सम्मान की बात है।

वित्तीय क्षेत्र अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो संसाधनों के कुशल आवंटन को सक्षम बनाता है, विभिन्न साधनों के माध्यम से जोखिमों का प्रबंधन करता है, और सुचारू भुगतान और निपटान सुनिश्चित करता है। यह महत्वपूर्ण कार्य करता है जो निवेश का समर्थन करता है और आर्थिक विकास को गति देता है। इसलिए, वित्तीय क्षेत्र एक अच्छी तरह से काम करने वाली अर्थव्यवस्था की आधारशिला बन जाता है।

वित्तीय क्षेत्र जोखिमों के प्रति संवेदनशील है - विशेष रूप से प्रणालीगत जोखिम, जिन्हें अगर अनियंत्रित छोड़ दिया जाए, तो उनके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि ये प्रणालीगत जोखिम दो आयामों में प्रकट होते हैं: समय और परस्पर जुड़ाव। एक ओर, वित्तीय जोखिम समय के साथ बढ़ सकते हैं, विषेशरूप से आर्थिक उत्साह के दौर में। दूसरी ओर, वित्तीय संस्थानों, बाजारों और व्यापक अर्थव्यवस्था के बीच बढ़ते अंतर्संबंध प्रणाली को आघातों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाते हैं।

आज की दुनिया में, चुनौतियाँ पहले से कहीं ज़्यादा जटिल और अप्रत्याशित हैं। पारंपरिक जोखिम, जैसे कि ऋण और चलनिधि जोखिम, अब नए और तेज़ चालक हैं। उदाहरण के लिए, बैंक रन जो पहले कई दिनों में सामने आते थे, जिससे विनियामकों को प्रतिक्रिया देने का समय मिल जाता था, अब इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग की गति के कारण कुछ ही घंटों में हो सकते हैं। प्रौद्योगिकी पर बढ़ती निर्भरता भी कमज़ोरियों को जन्म देती है, जैसे कि तीसरे पक्ष के सेवा प्रदाताओं पर निर्भरता और साइबर सुरक्षा के बढ़ते खतरे, जबकि ग्राहक निर्बाध सेवाओं की अपेक्षा करते हैं। इसके अतिरिक्त, हम जलवायु जोखिम जैसे उभरते जोखिमों का सामना कर रहे हैं।

इस तेजी से अस्थिर होते वातावरण में, वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए सुदृढ़ता बनाना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, सुदृढ़ता एक संतुलनकारी कार्य है - सुरक्षा पर बहुत अधिक जोर देने से नवोन्मेष और विकास को बाधा उत्पन्न हो सकती है, जबकि बहुत कम बल देने पर प्रणाली को महत्वपूर्ण कमजोरियों के प्रति उजागर कर सकता है। आज हमारे सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में से एक है -सही संतुलन पाना, ताकि, हमारे पास एक मजबूत वित्तीय प्रणाली हो जो आर्थिक प्रगति को बाधित किए बिना संकटों का सामना कर सके।

वास्तव में, केंद्रीय बैंक क्रिकेट में विकेटकीपर या फुटबॉल में गोलकीपर की तरह होते हैं - अक्सर सफलता के समय उनकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता, लेकिन विफलता के समय हमेशा सुर्खियों में रहते हैं। जब सब कुछ सुचारू रूप से चलता है, तो उनके प्रयास पर्दे के पीछे रहते हैं, जिन्हें अक्सर हल्के में लिया जाता है। हालाँकि, जब कोई संकट आता है, तो उनसे पूछा जाता है कि वे गेंद को अपनी उंगलियों से कैसे फिसलने दे सकते हैं! इसके अलावा, केंद्रीय बैंकरों को और अधिक नुकसान को रोकने और स्थिरता को जल्दी से बहाल करने का भी काम सौंपा जाता है।

मैं एक उदाहरण देता हूँ: एक व्यक्ति की कल्पना करें जो चट्टान के किनारे पर डगमगा रहा है, ऐसा लगता है कि वह गिरने ही वाला है, लेकिन एक चौकस पर्यवेक्षक द्वारा उसे समय रहते वापस खींच लिया जाता है। जब केंद्रीय बैंक संभावित संकट को रोकने के लिए इस तरह से हस्तक्षेप करते हैं, तो वे लोग जिनकी वे

* 14 अक्टूबर, 2024 को नई दिल्ली में "चौराहे पर केंद्रीय बैंकिंग" विषय पर आरबीआई@90 उच्च स्तरीय सम्मेलन में भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर श्री स्वामीनाथन जे. का संबोधन।

रक्षा करते हैं, वे दावा कर सकते हैं कि उन्हें बचाने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं थी। यह एक सामान्य विरोधाभास को उजागर करता है - जबकि नियामक स्थिरता बनाए रखने और आपदाओं को रोकने के लिए अथक प्रयास करते हैं, उनकी सफलताएँ अक्सर किसी की नज़र में नहीं आती हैं, और उनके कार्यों को कभी-कभी उन लोगों द्वारा अनावश्यक, हस्तक्षेप या अत्यधिक मान लिया जाता है जो जोखिमों से अनजान हैं। फिर भी यह वास्तव में यह सक्रिय निरीक्षण ही है जो वित्तीय प्रणाली की सुरक्षा और सुदृढ़ता सुनिश्चित करता है, जिससे यह अनिश्चितता के समय में भी सुचारू रूप से कार्य कर सकता है।

पिछले कुछ वर्षों में केंद्रीय बैंकों की भूमिका में उल्लेखनीय बदलाव आया है। शुरू में इसे अंतिम उपाय के रूप में देखा जाता था, लेकिन आज केंद्रीय बैंकों के पास वित्तीय प्रणाली की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कई तरह के साधन हैं – विनियामकीय, पर्यवेक्षी और मौद्रिक। कुछ देशों में, केंद्रीय बैंकों की पर्यवेक्षी भूमिका नहीं होती है, क्योंकि पर्यवेक्षण एक अलग एजेंसी द्वारा किया जाता है, लेकिन एक समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है। सरकारों, केंद्रीय बैंकों, वित्तीय विनियामकों और उद्योग को वित्तीय स्थिरता की रक्षा के लिए उचित और समय पर कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

भारत में, केंद्रीय वित्त मंत्री की अध्यक्षता में वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी), रिज़र्व बैंक के गवर्नर की अध्यक्षता वाली अपनी उप-समिति के साथ मिलकर, वित्तीय क्षेत्र में जोखिमों के बारे में चर्चा और बेहतर समझ को प्रभावी ढंग से सुविधाजनक बना रही है। हर दो साल में, रिज़र्व बैंक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट प्रकाशित करता है जो भारत के वित्तीय परिदृश्य का संपूर्ण जोखिम आकलन प्रस्तुत करती है। ये रिपोर्टें वित्तीय क्षेत्र को प्रभावित करने वाली संभावित कमजोरियों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करने के लिए समष्टि-दबाव परीक्षण, संवेदनशीलता विश्लेषण, नेटवर्क और संक्रामक आकलन और प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण का उपयोग करती हैं। अंतर-नियामकीय समन्वय के अलावा, आरबीआई नियमित जुड़ाव/ बातचीत के माध्यम से उद्योग के साथ सक्रिय रूप से जुड़ता है, जिसमें पर्यवेक्षित संस्थाओं के बोर्ड के साथ सम्मेलन, एमडी और सीईओ के साथ आवधिक बैठकें, आश्वासन कार्यों के प्रमुखों के साथ-साथ लेखा परीक्षकों के साथ बातचीत शामिल है।

घरेलू समन्वय के महत्व पर चर्चा करने के बाद, मैं वैश्विक पर्यवेक्षी सहयोग के महत्व पर भी जोर देना चाहूंगा। ऐतिहासिक रूप से, संकटों ने साझा चुनौतियों का समाधान करने के लिए पर्यवेक्षकों को एक साथ लाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया है। उदाहरण के लिए, बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बेसल समिति का गठन हर्स्टैट बैंक की विफलता के बाद किया गया था, जिसने प्रणालीगत जोखिमों के लिए समन्वित प्रतिक्रिया की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। हालाँकि, हमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने से पहले संकटों के खत्म होने का इंतजार नहीं करना चाहिए। संभावित जोखिमों और कमजोरियों की सक्रिय क्षितिज स्कैनिंग के लिए अधिक जुड़ाव, साथ ही इन चुनौतियों को कम करने और उन्हें दूर करने की रणनीतियों पर चर्चा, हमारे सामूहिक सुदृढ़ता और संकट से निपटने की तैयारी को बढ़ा सकती है।

वास्तव में, अगले दशक के लिए हमारे एजेंडे, RBI@100 के एक हिस्से के रूप में, रिज़र्व बैंक वैश्विक दक्षिण के केंद्रीय बैंकों के साथ अधिक से अधिक जुड़ने का इरादा रखता है। रिज़र्व बैंक का लक्ष्य एक मजबूत जोखिम पहचान और अनुपालन संस्कृति को बढ़ावा देकर, एक "चक्र-दर-चक्र" जोखिम मूल्यांकन ढाँचा बनाकर जोखिम-केंद्रित पर्यवेक्षण का एक वैश्विक मॉडल स्थापित करना भी है। रिज़र्व बैंक अपने पर्यवेक्षी कार्यों का समर्थन करने के लिए एक व्यापक आंकड़ा विश्लेषण पारितंत्र बनाने के लिए काम कर रहा है।

इन विचारों को ध्यान में रखते हुए, मैं इस विषय पर एक समृद्ध और व्यावहारिक पैनल चर्चा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि कैसे केंद्रीय बैंक वित्तीय स्थिरता को बढ़ाना जारी रख सकते हैं और एक सुदृढ़ वैश्विक वित्तीय प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं। धन्यवाद!